'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा' का ईएसआईसी मुख्यालय पर प्रदर्शन; प्रमुख मांग : डीन की बर्खास्तगी

नई दिल्ली (मज़दूर मोर्चा) ईएसआई कॉर्पोरेशन द्वारा मज़दूरों को दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं की दुर्दशा को लेकर इसके मुख्यालय पर भारी प्रदर्शन करने की आवश्यकता काफ़ी समय से महसूस की जा रही थी। कुछ हद तक यह आवश्यकता छः नवम्बर को फ़रीदाबाद के क्रांतिकारी मज़दूरों ने पूरी करने का प्रयास किया।

कॉर्पोरेशन के महानिदेशक राजेन्द्र कुमार आईएएस को सम्बोधित ज्ञापन जो उनकी अनुपस्थिति में मेडिकल कमिश्नर दीपिका गोविल को सौंपा गया। ज्ञापन की मूलप्रति पेज नं. 2 पर बॉक्स में ज्यों की त्यों दी जा रही है। इसमें सारा ज़ोर ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज फ़रीदाबाद के डीन डॉ. असीम दास को बर्ख़ास्त करने पर दिया गया है। केवल औपचारिकता निभाते हुए इस अस्पताल की कमियों को दूर करने की मांग की गई है। इसका मूल कारण, जो ज्ञापन को पढ़ने से नज़र आ रहा है, तीन नवम्बर को क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा के कार्यकर्ताओं के साथ अस्पताल के गार्डों के साथ हुई झड़पा-झड़पी है।

उक्त घटना 44 वर्षीय अशोक नामक मरीज़ को लेकर हुई थी। इस मरीज़ को पीआईवीडी (प्रोट्रयूजन ऑफ इंटर वर्टीब्रल डिस्क) यानी कमर के दर्द की जटिल बीमारी है। यद्यपि प्रदशनकारी मज़दूर नेताओं द्वारा बताया गया कि अशोक को यह बीमारी बीते करीब एक-दो माह से थी। हालत ज्यादा

बिगड़ने तथा वांछित उपचार न मिलने की शिकायत लेकर 30 अक्टूबर को क्रांतिकारी मज़दूर नेता डीन डॉ. असीमदास से मिले तो उन्होंने तुरन्त अशोक को अस्पताल में दाखिल करके हड्डियों के डॉक्टर को आवश्यक दिशानिर्देश दे दिये थे। इलाज कर रहे डॉक्टर रजत गुप्ता ने पाया कि मरीज़ का एमआरआई जरूरी है लेकिन फिलहाल मरीज़ की स्थिति ऐसी नहीं थी कि उसका एमआरआई किया जा सके। डॉक्टरों के अनुसार मरीज़ को जितने समय तक एमआरआई मशीन मे लिटा कर रखना होता है वह उसके लायक अभी नहीं था। मरीज़ को उस स्थिति के लायक बनाने तथा इस दौरान उसे दर्द से राहत दिलाने का प्रयास किया जा रहा था।

क्रांतिकारी मज़दूर नेता डॉक्टरों के इलाज की इस रणनीति से संतुष्ट नहीं थे। शायद वे यह चाहते हों कि उनके साथी मरीज़ का इलाज तुर्त-फुर्त करके उसे स्वस्थ कर दिया जाए। हड्डी विशेषज्ञ डॉ. रजत गुप्ता के अनुसार इस तरह की बीमारी में सर्जरी करने की अपेक्षा अन्य उपायों के इस्तेमाल को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि सर्जरी के बाद भी ठीक होने के चांस फिफ्टी-फिफ्टी ही होते हैं। ऐसे में कोई भी सर्जन जोखिम लेने से बचता है। इसी दौरान यह भी पता लगा कि संस्थान के डीन खुद भी इसी बीमारी के शिकार हैं और सर्जरी से बचते हुए अन्य उपायों का सहारा ले रहे हैं। इसी के चलते डीन दफ्तर में कुर्सी पर बैठने के बजाय अधिक समय खड़े-खड़े ही काम करते हैं, खाना भी खड़े होकर खाते हैं। बैठने और लेटने की अपेक्षा खड़े रहने में ज्यादा आराम मिलता है।

क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा द्वारा ज्ञापन में लगाये गये आरोपों के बारे में अस्पताल प्रशासन का कहना है कि वे सदैव मरीज़ों की शिकायत सुनने व उनका निदान करने के लिये तत्पर रहते हैं। लेकिन मारपीट व डंडे के बल पर किसी की भी मनचाही मुराद पूरी नहीं की जा सकती। जब वे 30 अक्टूबर को मरीज दाखिल कराने आ सकते थे तो तीन तारीख को भी आकर उसकी पीड़ा एवं समस्या के बारे में बातचीत कर सकते थे।

उनके अनुसार उक्त क्रांतिकारियों ने झंडों-डंडों के साथ ओपीडी में प्रवेश करना चाहा तो वहां मौजूद चार महिला गार्डों ने उन्हें रोकने का भरसक प्रयास किया। इस प्रयास में तीन महिला गार्ड कुछ हल्की-फुल्की घायल भी हुईं। स्थिति की नजाकत को देखते हुए आसपास तैनात पुरुष सिक्योरिटी गार्ड भी मौके पर पहुंचे। ऐसे में दोनों पक्षों में अच्छी-खासी झड़पा-झड़पी के बाद प्रदर्शनकारियों को परिसर से बाहर खदेड़ दिया गया।

सूचना मिलने पर स्थानीय पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस को बताया कि वे तो डीन को ज्ञापन देने आये थे। इस पर पुलिस ने कहा कि डीन ओपीडी में नहीं अपने ऑफिस में बैठते हैं, चार जने जाकर वहां ज्ञापन दे आओ। जब सात-आठ प्रदर्शनकारी ज्ञापन देने डीन ऑफिस पहुंचे तो डीन ने उन्हें बैठा लिया। इससे पहले कि डीन से कोई बातचीत शुरू होती कि सम्बन्धित अधिकारी कुछ देर पहले हुई मारपीट की रिपोर्ट लेकर डीन के सामने पहुंच गये। यह रिपोर्ट सुनकर उनका मूड खराब इतना हो गया कि उन्होंने मज़दूर नेताओं से बात करने से मना कर दिया और दफ्तर से निकल जाने को कहा।

इस पर प्रदर्शनकारियों के अध्यक्ष नरेश कुमार ने डीन को अपना ज्ञापन देना चाहा जिसे लेने से उन्होंने मना कर दिया। उनका कहना था कि बगैर मारपीट किये उनके पास आते तो वे सब कुछ सुनते और बेहतरीन करने का प्रयास करते, लेकिन इस स्थिति में उनसे कोई बातचीत करना नहीं चाहेंगे। लेकिन कामरेड नरेश ज्ञापन देने पर अड़े रहे तो डीन ने ज्ञापन लेकर फ़ाड़ कर फेंक दिया और नरेश को गुद्दी पकड़ कर दरवाजे से बाहर कर दिया।

प्रदर्शनकारियों ने अपने कुछ घायल साथियों के एमएलआर बीके अस्पताल से कटवा कर स्थानीय पुलिस चौकी एनएच तीन में झगड़े की शिकायत के साथ दे रखी है। उधर अस्पताल कर्मचारियों ने भी अपनी मरहम पट्टी तो खुद ही कर -करा ली है, लेकिन पुलिस के चक्कर में पड़ने की जरूरत नहीं समझी।

डीन के विरुद्ध इतनी 'भयंकर' शिकायत पाकर मुख्यालय की तो मानो मुराद ही पूरी हो गई

'मज़दूर मोर्चा' के सुधी पाठक बखूबी जानते हैं कि मुख्यालय पर काबिज़ जीडीएमओ गिरोह और डीन के बीच पहले दिन से ही छत्तीस का आंकड़ा चला आ रहा है। मज़दूरों से वसूले गये पैसों पर कुंडली मारे बैठा गिरोह कभी नहीं चाहता था कि मेडिकल कॉलेज बने, और बन भी गया तो चलने न पाये। उनके अपने इस लक्ष्य के लिये जीडीएमओ गैंग ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। बनी-बनाई बिल्डिंग को कॉर्पोरेट के अलावा हरियाणा सरकार तक को सौंप कर छुटकारा पाने का प्रयास किया था। लेकिन डीन के साथ-साथ स्थानीय मज़दूर संगठनों के सतत प्रयासों के चलते यह मेडिकल कॉलेज विधिवत रूप से चल पाया।

मेडिकल कॉलेज भले ही जैसे-तैसे चल तो गया लेकिन जीडीएमओ गैंग ने हार नहीं मानी। मेडिकल काउंसिल ऑफ इन्डिया के नियमों को धता बताते हुए एमएस (चिकित्सा अधीक्षक) अपने ही गैंग में से लगा कर सारी वित्तीय शक्तियां उसी के हाथ में रखीं ताकि डीन अस्पताल को चलाने के लिये आवश्यक खर्चे न कर सकें। लेकिन डीन ने भी हार नहीं मानी। कभी डीजी, कभी श्रम सचिव तो कभी श्रममंत्री को स्थिति से अवगत करा कर, गिरोह द्वारा खड़ी की गई रुकावटों को धीरे-धीरे दूर करते चले गये।

इसकी बदौलत अस्पताल दिन दूणी-रात चौगुणी उन्नति करता चला गया। मात्र 510 बेड के इस अस्पताल में 950 तक मरीज़ दाखिल हो चुके हैं। प्रति दिन 4000-4500 मरीज़ ओपीडी में इलाज के लिये आते हैं। मज़दूर के कट कर अलग हुए हाथ को जोड़ने का कारनामा हो या हृदय के वाल्व बदलने का, बोनमैरो ट्रांसप्लांट करने का, एंजियोग्राफ़ी- एंजियोप्लास्टी करने का, अस्सी मरीजों का रोजाना डायलीसिस करने का या सैंकड़ों कैंसर मरीजों का सफल उपचार करने का, इसका सारा श्रेय इस संस्थान को जाता है।

इतना ही नहीं प्रति दिन पांच-सात ऑपरेशन थियेटरों में सर्जरी करने, बेहतरीन स्त्री एवं प्रसूति विभाग की सेवाएं तथा आंख का कॉर्निया बदलने जैसे काम जो ईएसआई अस्पतालों में कभी सोचे नहीं जा सकते थे, वे सब यहां हो रहे हैं। और तो और विभिन्न बीमारियों के करीबन 500 मरीज दिल्ली, नोएडा, गुड़गांव आदि से यहां रैफर कर दिये जाते हैं। इन्हीं कारणों से अस्पताल अपनी कार्य क्षमता से 150 प्रतिशत अधिक पर कार्य कर रहा है।

लेकिन इस सबके बावजूद जीडीएमओ गैंग अपनी ओछी हरकतों से बाज नहीं आ रहा।

अस्पताल पर आरोप लगाये जा रहे हैं कि यहां पर प्रति बेड खर्चा बहुत हो रहा है। खर्चा क्यों न बहुत हो जब कैंसर मरीजों को न तो रेफर किया जाता था और न ही महंगी दवाईयां दी जाती थी, उन्हें केवल मरने के लिये छोड़ दिया जाता था। यही हाल हृदय रोगियों के साथ भी होता था। सुपर स्पेश्लिटी के इतने काम बढ़ जाने के बावजूद अस्पताल में स्टाफ़ केवल 300 बेड के बराबर का ही है। ऊपर से तुर्रा यह कि खर्चा बहुत बढ़ा रखा है। संदर्भवश सुधी पाठक यह भी जान लें कि संस्थान के बेहतरीन काम-काज को देखते हुए अनेकों एनजीओ व औद्योगिक प्रतिष्ठान समय-समय पर करोड़ों रुपये के उपकरण इस अस्पताल को देते आ रहे हैं।

जीडीएमओ गैंग का तर्क यह है कि डीन असीम दास को इतना बेहतरीन काम करने की जरूरत ही क्या है जो यहां मरीजों की इतनी भीड़ जुटा ली है ? उन्हें जीडीएमओ गैंग से कुछ सीखना चाहिये ताकि इतनी भीड़ न बढ़े। विदित है कि देश भर में कॉर्पोरेशन द्वारा चलाये जा रहे अस्पतालों में केवल 38 प्रतिशत बेड ही भरे रहते हैं, शेष 62 प्रतिशत इसलिये खाली नहीं रहते कि मज़दूर बीमार नहीं होते बल्कि इसलिये खाली रहते हैं कि उन्हें इलाज देने की बजाय रफ़ा-दफ़ा कर दिया जाता है। बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं, दीपिका गोविल मेडिकल कमिश्नर बनने से पहले बसई दारापुर मेडिकल कॉलेज की एमएस थीं जहां 48 प्रतिशत बेड ही भरे हैं। इनसे पहले वाले मेडिकल कमिश्नर दीपक शर्मा भी उसी मेडिकल कॉलेज के एमएस रहे थे तो भी यही हाल था। इस मेडिकल कॉलेज के 1000 बेड में से केवल 600 को ही चालू रखा गया है, 400 बेड को तो पहले ही ताला लगा दिया गया। इन 600 में से भी 300 बेड बमुश्किल भरे रहते हैं। एक और मजेदार बात यह भी है कि यहां 18 विषयों में 100 से अधिक डॉक्टर पोस्ट ग्रेजुएशन कर रहे हैं।

डीन : ''मैने किसी को धक्का नहीं मारा, न ही कॉलर पकड़ा''

'सारे मामले पर संस्थान के डीन से पूछने पर उन्होंने कहा कि जब वे लोग मेरे पास दफ्तर में आए तो मैने बाकायदा उनको बैठाया और बातचीत शुरू करने से पहले सूचना मिली कि ये लोग गार्डों के साथ मारपीट करके आए हैं। मुझे ये बुरा लगा, मैने इनसे कहा कि आप लोग जाइए आप से कोई बातचीत नहीं करूंगा, जब ये बाहर नहीं निकले तो मैने कहा कि ठीक है मैं ही जाता हूं और मैं उठकर बाहर जाने लगा, जब मैं निकलने लगा तो मेरे आगे आगे ये भी हो लिए। मैने न किसी को धक्का दिया न कॉलर पकड़ा।'

'ये लोग कोई पहले ज्ञापन देने वाले नहीं थे यहां तो अक्सर ज्ञापन देने के लिए विभिन्न मज़दूर संगठनों के लोग आते रहते हैं और हम लोग गेट पर जाकर ज्ञापन तो लेते ही हैं और बैठ कर समस्या पर बातचीत भी करते हैं। लेकिन यह कोई तरीका नहीं होता डंडे लेकर फार्मेसी काउंटरों परें दवाई लेने को खड़ी महिलाओं के बीच घुसने और प्रयास करना और रोके जाने पर गार्डों पर हमला करना। यही लोग 30 अक्तूबर को भी मेरे पास उसी मरीज को लेकर आए थे जिसका मैंने तुरंत समाधान किया था। उस दिन राष्ट्रीय स्तर का सुविधा समागम ऑनलाइन चल रहा था जिसे डीजी संबोधित कर रहे थे। यदि कोई समस्या थी भी तो ये लोग भी डायरेक्ट डीजी से संवाद कर सकते थे, वैसे भी हम दिन प्रतिदिन मरीजों की समस्याएं सुनने के अलावा हर महीने सुविधा समागम का आयोजन करते हैं। जिसमें कोई भी मरीज अपनी समस्या रख सकता है। झगड़ा करने आए लोग बीमाकृत भी नहीं थे।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।